-: अध्याय-६ :-

-: उपसंहार :-

साहित्य समाज का एक प्रतिबिम्ब है, समाज का मार्गदर्शक है तथा ये एक तरह से समाज का लेखा-जोखा है। किसी भी राष्ट्र या सभ्यता की जानकारी हमे हासिल करनी हो तो उसके साहित्य से वो हमें हासिल हो सकती है। साहित्य लोकजीवन का एक अभिन्न अंग माना जाता है। किसी भी काल के साहित्य से उस समय की परिस्थितियों, जनमानस के रहन-सहन, खान-पान व अन्य गतिविधियों के संदर्भ में पता चलता है तथा समाज साहित्य को प्रभावित भी करता है और ये दोनों एक सिक्के के दो पहलू कहे जा सकते हैं। साहित्य का समाज से उसी तरह का संबंध होता है, जिस तरह से आत्मा का शरीर के साथ संबंध होता है अर्थात्् साहित्य समाज रूपी शरीर की एक आत्मा है और साहित्य अजर-अमर है। महान विद्वान **योननागोची के अनुसार ' समाज नष्ट हो सकता है, राष्ट्र भी नष्ट हो सकता है, किन्तु साहित्य का नाश कभी नहीं हो सकता.'**

साहित्य समाज का दर्पण है। किसी भी देश या समाज को कवियों या साहित्यकारों द्वारा जितना समझा जा सकता है उतना अन्य द्वारा नहीं। तभी तो कहा गया है कि -- " अपारे काव्य संसारे कविर्रेव प्रजापति:। यथास्मै रोचते विश्वं तथास्मै परिकल्पते।" कथा तथा उपन्यास हिंदी साहित्य की गद्यविधाओं में सबसे अधिक लोकप्रिय विधा है। ये दोनों ही मानव समाज के वास्तविक जीवन मूल्यों को स्पर्श करके उच्च जीवनादर्शों को अभिव्यक्त करते हैं, दरसल उसका एक कारण यह भी है कि साहित्यकार अंततोगत्वा समाज में व्याप्त विद्रूपताओं, मान्यताओं, रूढ़ियों एवं मानवजीवन को स्पर्श करने वाली समस्याओं को अपने लेखन का विषय बनाता है। जब तक वह जीवन के संघर्षों और सत्य से गुजरता नहीं तब तक वह जीवंत साहित्य का सर्जन नहीं कर सकता, अर्थात् प्रत्येक युग में साहित्यकार युगीन चेतना के ताने - बाने से जुड़ा रहता है। उन तारों की बुनावट एवं झंझलाहट से प्रभावित होकर पश्चात् में वह जीवन की ऐसी तस्वीर का निर्माण करता है जो अधिक कलात्मक, रोचक एवं यथार्थ होती है, जो कि पाठक को अपनी तरफ आकर्षित करती रहती है।

उपरोक्त विशेषताओं एवं उपलब्धियों को ध्यान में रखकर मैंने कथा - साहित्य को अपने शोध का विषय बनाया है। मेरे अनुसंधान का विषय है **"मंजूर एहतेशाम के कथा- साहित्य में सामाजिक सद्भाव एक अध्ययन"**

हिंदी भाषी क्षेत्र में जन्म एवं शिक्षा के कारण प्रारंभिक दिनों से मातृभाषा हिंदी के प्रति लगाव एवं आकर्षण होना स्वाभाविक है। इसके पश्चात् जैसे-जैसे अध्ययन के क्षेत्र में आगे बढ़ने का अवसर मिलता गया वैसे - वैसे हिंदी भाषा एवं उसके साहित्य के प्रति मेरा लगाव प्रतिदिन बढ़ता गया, परिणाम स्वरूप हिंदी की पत्र-पत्रिकाओं आदि के प्रति भी मेरा झुकाव बढ़ने लगा। इसके पश्चात् मैंने स्नातक और स्नातकोत्तर की उपाधि भी हिंदी साहित्य में प्राप्त की, गुरुजनों एवं आचार्य

के कुशल मार्गदर्शन के परिणाम स्वरूप स्नातक कक्षा में महाविद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया तथा शिक्षा में स्नातक (बी.एड.) की उपाधि प्राप्त की। इसके पश्चात् दो वर्षों तक अध्यापन क्षेत्र में काम करने का अवसर भी मिला।

हिंदी भाषा और साहित्य संबंधित संगोष्ठीयों में आते - जाते रहने से कुछ विद्वानों से मुलाकात हुई जिन्होंने मुझे शोधकार्य करने का सुझाव दिया इसी दौरान मैंने नेट तथा जे.आर.एफ. (NET & J. R. F.) की परीक्षा भी उत्तीर्ण की। इसी दौरान मेरी मुलाकात म्महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय की वरिष्ठ प्राध्यापिका प्रो. शन्नो पाण्डेय जी से हुई और मैंने उनके मार्गदर्शन में शोध-प्रबंध करने की इच्छा जाहिर की और उन्होंने बड़ी सरलता के साथ मेरे प्रस्ताव को स्वीकार करते हुए अपने निर्देशन में शोध-प्रबंध करने का अवसर मुझे प्रदान किया, मैं तहे दिल से एवं उनका अंतः करण से आभार मानता हूँ। इसके पश्चात् शोध विषय को लेकर उनके साथ काफी परामर्श के पश्चात् मैंने " मंजूर एहतेशाम के कथा - साहित्य में सामाजिक सद्भाव : एक अध्ययन " विषय का चयन किया।

यह विशेय अनुसंधान के क्षेत्र में बिल्कुल नया एवं मौलिक है । भारतवर्ष के बड़े भूभाग में सामाजिक जीवन - शैली, वेश-भूषा, रीति- रिवाज, रहन- सहन, लोक- संस्कृति एवं मानव मूल्यों को स्पष्ट करने वाली समस्याओं को केंद्र में रखकर अनेक भारतीय भाषाओं में लेखन कार्य हुआ है। हिंदी साहित्य में सामाजिक सद्भावना पर आधारित अनेक उपन्यास एवं कहानियाँ साहित्यकारों द्वारा लिखा गया है। मेरे शोधकार्य का मुख्य प्रयोजन यही है कि "एहतेशाम" जी के कथा-साहित्य में सामाजिक सद्भावना क्या है?

हिंदी कथा-साहित्य ने अपनी विकास यात्रा के लगभग सवा सौ वर्ष पूर्ण किए हैं। इन वर्षों की यात्रा में कथा और साहित्य ने कभी तो मानव की मन: स्थितियों को उद्देश्य माना तो कभी सामाजिक चेतना के यथार्थ चित्रण का अनुभव किया, कभी युग जीवन के मूल्यों का, कभी सांस्कृतिक मूल्यों का, तो कभी आंचलिकता का, कभी मानव मन की अंतरंगता को स्वर देने का प्रयत्न किया है। किंतु सम्यक रूप से विचार करने पर प्रतीत होता है कि आधुनिक हिंदी कथा-साहित्य का केंद्रीय स्वर्ग लोक- संस्कृति की कामना करना है। इसमें मानव जीवन, समाज एवं संस्कृति से जोड़ने वाली बातें, औपन्यासिक रूप धारण करके समाज के सामने आती हैं। अतः कथा - साहित्य की व्याख्या या परिभाषा भी मानव - जीवन, समाज एवं संस्कृति से जोड़कर होनी चाहिए।

गुजराती विभाग के श्रेष्ठ लेखक एवं समालोचक डॉ. भरत मेहता के विचार अनुसार -- "आजादी के शोरगुल में ऐतिहासिक घटना दब गई थी। वह घटना थी भारत विभाजन। इतिहासकारों ने इस घटना के प्रति आरंभ में उदासीनता दिखाई थी लेकिन घटना में हिंदुस्तान की सांस्कृतिक एकता तितर-बितर हो गई थी। लेकिन घटना से चिंतित भारतीय उपन्यासकारों ने इस

घटना की मानवीय त्रासदी के कई परिणामों को उजागर किया है। उर्दू, पंजाबी और हिंदी उपन्यासों में भारत विभाजन को लेकर कई महत्वपूर्ण रचनाएं भी हुई इसके परिणाम स्वरूप भारत के सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं सहित्यिक परिवेश में परिवर्तित स्थिति का प्रभाव हिंदी-साहित्य की विधाओं में भी देखा जा सकता है।

हमारा युवावर्ग साहित्य के प्रति बहुत आकृष्ट हो रहा है। हमारे व्यास, वाल्मीकि, कालिदास, तुलसीदास आदि ने सर्वोत्कृष्ट साहित्य लिखा जो कि आज भी मील के पत्थर है। उसमें दुर्बोधता नहीं है, कहीं क्लिष्टता नहीं है। एक सरलता है जो कि सद्भाव से है। इसी तरह एहतेशाम जी ने अपने साहित्य में लोकधर्मिता को दर्शाने का प्रयत्न किया है।

आधारभूत एवं विश्वसनीय सामग्री का संकलन अध्ययन की आधारभूत शिला है, उपलब्ध पाठ - सामग्री कितनी पूर्ण एवं प्रमाणिक तथा वैज्ञानिक होती है, उतना ही अध्ययन ठोस और उच्चस्तरीय बनता है। अध्ययन का कार्य प्रारंभ करने से पहले सामाजिक सद्भावना के अधिकारियों की सूची के बारे में प्रश्न खड़ा हुआ। वैसे तो रफीक ज़कारिया का 'बढ़ती दूरियां गहराती दरार', भीष्म साहनी का 'तमस', कमलेश्वर का 'कितने पाकिस्तान' आदि उपन्यास मैंने पढे थे, लेकिन मेरे साथ कार्य के लिए सामाजिक सद्भावना केंद्रित हिंदी एवं अन्य हिंदी उपन्यास की भी आवश्यकता थी। इसके लिए मैंने अलग-अलग प्रकाशनों की सूची को देखा और मेने साथ ही अपने कार्य के लिए उपयोगी रचनाओं संबंधित रचनाओं के लिए पत्राचार भी किए हैं। जिनका प्रयोग मैंने अपने शोध-प्रबंध मैं बहुत ही सफलतापूर्वक किया है।

मंज़ूर एहतेशाम हिंदी के एक ऐसे बिरले साहित्यकार माने जाते हैं जिनका मानना है कि साहित्यकार को सिर्फ उसके कृतित्व के आधार पर ही नही, प्रायः उसके व्यक्तित्व के निकष पर भी उसे कसना आवश्यक है। ये कहते हैं कि मेरा साहित्य आत्मकथात्मक है जो मैंने सहा और देखा है उसी की छाया मैंने अपनी रचनाओं में प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है। कवि या लेखक को, कवि या लेखक होने से पूर्व एक अच्छा इंसान होना चाहिए बल्कि मंजूर एहतेशाम जी तो यहाँ तक कहते हैं कि एक अच्छा इंसान ही एक अच्छा कवि या लेखक हो सकता है क्योंकि उसके अंदर सकारात्मक सामाजिक सद्भावना होती है।

साहित्य और कला के क्षेत्र में एक विचित्र सी परंपरा प्रवाहित हो रही है कि जो लेखक वैयक्तिक रूप से औरों के लिए जितना ही रहस्यमय होगा, औरों से कटकर रहेगा, औरों से कुछ भिन्न होने का स्वांग रचता होगा, तो वह एक महान रचनाकार कहलाएगा और इसके नतीजतन कुछ तथाकथित महान साहित्यकारों में साधारण मनुष्यों जैसे सद्‌गुण विद्यमान नही होते मानवीय सद्भावनाओँ से वे अनभिज्ञ होते हैं। इस गलत अवधारणा या भ्रांति के मूल में यह कारण अवश्य रहा होगा कि समयानुसार अति विशिष्टता का बोध आरोपित करने की लिप्सा में यह अपने आस-पास एक ऐसा प्रपंच निर्धारित करते हैं कि लोग उस छलावे में आ फसते चले जाते हैं, अन्यथा प्रेमचंद,

रेणु, नागार्जुन,भीष्म साहनी को तो ऐसा करने की आवश्यकता ही नही थी। प्रेमचंद रेणु जैसे साहित्यकार अपने समय के बिरले साहित्यकार ही होते हैं जोकि भविष्य में भी अपनी महत्ता को बनाए रखते हैं और हमारे आधुनिक युग के आलोच्य लेखक मंजूर एहतेशाम भी ऐसे ही बिरले साहित्यकारों में से एक हैं।

" मंजूर एहतेशाम के कथा-साहित्य में सामाजिक सद्भाव : एक अध्ययन " विषय पर जब मैंने तलाश की तो पाया कि इस विषय पर अनुसंधान की काफी गुंजाइश है। करण की इस विषय पर ना के बराबर अनुसंधान किया गया है। लेखक के एक उपन्यास " सूखा बरगद " पर दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली की एक छात्रा ने लघु शोथ प्रस्तुत किया है। जिसका नाम पिंकी रानी है, जिन्होंने केवल मुस्लिम मानस पर कार्य किया है। अर्थात् जो मेरे शोध-प्रबंध का विषय है वह उस विषय से काफी अलग तथा मौलिक है। मैंने एक नवीन एवं मलिक रोचक विषय को चुना है इस नवीन विषय पर शोध-प्रबंध लिखने का मैंने अपने इस शोध-प्रबंध में भरसक प्रयत्न किया है।

" मंजूर एहतेशाम के कथा- साहित्य में सामाजिक सद्भाव : एक अध्ययन" शोध - विषय की सीमाओं को ध्यान में रखते हुए एहतेशाम के कथा-साहित्य में सामाजिक सद्भावना पर केंद्रित कहानी एवं उपन्यासों की चर्चा करना उचित था। क्योंकि विषय की व्यापकता उनकी उपलब्धियों से जुड़ती है। इस विषय पर केंद्रित उपन्यासों में सामाजिक, धार्मिक, जातीय, भाषाई, रहन - सहन, उनमें प्रचलित मान्यताएं , दंत कथाएं शैली विज्ञान की अवधारणा सहज विभाजन की स्थिति, आजादी से पूर्व तथा पश्चात् की स्थिति तथा भारतीय मुसलमानों के प्रति कड़वाहट क्यों? हमारा अपने मुस्लिम भाइयों के प्रति क्यों चौकन्ना होना? एवं सांप्रदायिकता को बढ़ावा मिलना तथा समाज के स्वरूप एवं आवश्यकता, व्यक्ति तथा समाज के अंत: संबंध, व्यक्ति का समाज के प्रति दायित्व, समाज का व्यक्ति के प्रति दायित्व तथा सामाजिक सद्भावना के तत्व जैसे- पारिवारिक - सामाजिक - धार्मिक - राजनीतिक - सांप्रदायिक - सांस्कृतिक - भाषाई आदि तत्वों पर हमने प्रकाश डालने का यथासंभव प्रयत्न किया है।

मंज़ूर एहतेशाम जी के कथा-साहित्य में भोपाल की तथा भारत विभाजन की एवं उनकी आप-बीती का निरूपण प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से हुआ है। इन परिस्थितियों के अंतर्गत - पारिवारिक सद्भावना, सामाजिक सद्भावना, धार्मिक सद्भावना, सांप्रदायिक सद्भावना, सांस्कृतिक सद्भावना, भाषाई सद्भावना, राष्ट्र के प्रति सद्भावना के साथ - साथ सामाजिक जन - जीवन का चित्रण एहतेशाम जी ने किया है। अतः मैंने अपना शोध विषय प्रो. शन्नो पाण्डेय जी के निर्देशन में शोध का विषय रखा - **"मंज़ूर एहतेशाम के कथा-साहित्य में सामाजिक सद्भाव: एक अध्ययन"** आलोच्य विषय को केंद्र में रखते हुए सामाजिक सद्भवना के विषय मे अध्ययन करने का मेरा उद्देश्य था। इसके उपरान्त चार - पाँच वर्ष के कठोर परिश्रम, लेखन, अध्ययन, अवगाहन और पुनर्लेखन के पश्चात् मैं शोध - प्रबंध प्रस्तुत कर रहा हूँ। शोध - प्रबंध के विषय के साथ न्याय करने हेतु और उसके

समुचित सम्गुंफन के लिए हमने उसे निम्नलिखित षष्ठ अध्यायों में विभाजित किया है।

1. **प्रथम अध्याय :** व्यक्ति एवं समाज : पृष्ठभूमि।
2. **द्वितीय अध्याय :** मंज़ूर एहतेशाम जी का जीवन परिचय।
3. **तृतीय अध्याय :** हिंदी के सामाजिक सद्भाव पर आधारित कहानी एवं उपन्यास।
4. **चतुर्थ अध्याय :** मंज़ूर एहतेशाम के उपन्यास साहित्य में सामाजिक - सद्भवना।
5. **पंचम अध्याय :** मंज़ूर एहतेशाम के कहानियों में सामाजिक - सद्भवना।
6. **षष्ठ अध्याय :** उपसंहार।

प्रस्तुत शोध - प्रबंध का आलोच्य विषय **"मंज़ूर एहतेशाम के कथा-साहित्य में सामाजिक सद्भाव: एक अध्ययन"** है। हिन्दी साहित्य में एहतेशाम जी के समग्र साहित्य पर कोई शोध-प्रबंध उपलब्ध नही है। केवल एक लघु शोध-प्रबंध हुआ है जिसका वर्णन हम ऊपर दे चुके हैं। इस दृष्टि से एहतेशाम जी के कथा - साहित्य में सामाजिक सद्भव का विश्लेषण और मूल्यांकन मेरी तरफ से पहला प्रयत्न है।

स्वतंत्र्योत्तर काल में भारतीय सामाजिक व्यवस्था के पुनर्निर्माण के सरकारी एवं गैर सरकारी संगठनों ने अनेक प्रकार के प्रयत्न किए हैं। सामाजिक सद्भावना पर केंद्रित एहतेशाम जी के कथा-साहित्य में सामाजिक एवं राष्ट्रीय उत्कर्ष में विशेष योगदान प्रस्तुत करने के लिए समग्र उपादानों का उपयोग किया गया है। प्रस्तुत शोध-प्रबंध में इसका विस्तार से निरूपण करने में उक्त विषय की महत्ता का समावेश किया गया है।

भारतीय स्वतंत्रता के पश्चात् प्रजातांत्रिक मूल्यों के आधार पर परंपरागत सामाजिक व्यवस्था का पुन: निर्माण करने के लिए भारतीय जन-नायकों के समक्ष यह प्रश्न था कि समाज में मानव मूल्यों की महत्ता की स्थापना करना। राजनीतिक एवं सामाजिक नेताओं के समान ही हिंदी के उपन्यासकारों या साहित्यकारों ने सामाजिक सद्भावना के यथार्थ को समझा एवं स्वीकृत किया है प्रस्तुत शोध में इस बात को स्पष्ट करना मेरा मुख्य उद्देश्य रहा है।

आलोच्य शोध-प्रबंध के कथा-साहित्य में सामाजिक सद्भाव में यथार्थ के विविध आयामों को रेखांकित किया गया है। भारतवर्ष के अनेक भूखंडों में रहने वाले हिंदू-मुस्लिम के सद्भाव की चेतना का विस्तार से यहाँ अध्ययन किया गया है। इस परिकल्पना से प्रभावित होकर इस प्रस्तावित शोध-प्रबंध में राष्ट्रीय चेतना एवं मूल्यों को समझना और उसे चरितार्थ करने का प्रयत्न किया गया है हमारे लिए यही इस शोध-प्रबंध का महत्व एवं उपयोगिता रही है।

उपर्युक्त मुद्दों की चर्चा के उपरान्त अध्याय के अंत में समग्रावलोकन की प्रक्रिया द्वारा अध्यायगत निष्कर्ष को समाहित किया गया है एवं “संदर्भानुक्रम” को अध्यायों के अंत में ही प्रस्तुत किया गया है। उसमें सहायक ग्रन्थ या संदर्भ ग्रन्थ का नामोल्लेख, उनके लेखक तथा पृष्ठ-संख्या इत्यादि को विधिवत् रूप से प्रस्तुत किया गया है। संदर्भ-ग्रन्थ के स्थान पर यदि पत्र-पत्रिका हुए तो उनका भी विधिवत् उल्लेख किया गया है - महीना, वर्ष, पृष्ठ-संख्या, लेखक का नाम आदि के साथ और लगभग यही प्रविधि शोध-प्रबंध के अन्य अध्यायों में भी हमने प्रस्तुत की है।

प्रस्तुत शोध - प्रबंध **छ: अध्यायों** में विभाजित है प्रथम अध्याय:- **' व्यक्ति एवं समाज : पृष्ठभूमि '** है, जिसके अंतर्गत एहतेशाम जी के कथा-साहित्य में सामाजिक सद्भाव में व्यक्ति एवं समाज की पृष्ठभूमि को नियमित रूप से स्पष्ट करने का मैंने प्रयत्न किया है जिसमें सर्वप्रथम हमने व्यक्ति एवं समाज को व्याख्यायित किया है कि व्यक्ति या मनुष्य क्या है? उसके बाद समाज क्या है इसको परिभाषाओं के द्वारा हमने समझाने का प्रयास किया है और इसके पुष्टि तथ्यों से उसको प्रमाणित भी क्या है तथा उसके बाद व्यक्ति एवं समाज का अंत: संबंध, समाज का स्वरूप, एवं उसकी आवश्यकता, व्यक्ति का समाज के प्रति दायित्व, समाज का व्यक्ति के प्रति दायित्व एवं सद्भावना के विविध रूप पारिवारिक सद्भावना, सामाजिक सद्भावना, धार्मिक सद्भावना, सांप्रदायिक सद्भावना, सांस्कृतिक सद्भावना, भाषाई सद्भावना, राष्ट्र के प्रति सद्भावना पर गंभीरता से विचार विमर्श किया है साथ ही इन रूपों के माध्यम से व्यक्ति एवं समाज के अध्ययन के साथ-साथ विभिन्न प्रकारों का भी अध्ययन हमने इस शोध-प्रबंध में प्रस्तुत किया है।

शोध - प्रबंध के द्वितीय अध्याय **' मंज़ूर एहतेशाम जी का जीवन-परिचय '** जिसके अंतर्गत इनके पहले विभाग में इनके व्यक्तित्व को रखा है जिसमे एहतेशाम जी की भूमिका, जन्म वर्ष एवं जन्म स्थल, पारिवारिक स्थिति, शिक्षा, कार्यक्षेत्र, तथा इनकी आप बीती का विस्तार पूर्वक वर्णन किया गया है और दूसरे विभाग में इनके कृतित्व को रखा है जिसमे एहतेशाम जी की रचनाएँ, पुरस्कार, इनकी रचनाओं का अन्य भाषा में अनुवाद, अन्य क्षेत्रों में इनके कार्य, एवं इनकी पुरस्कृत रचनाओं आदि के विषय में विस्तृत रूप में चर्चा की गई है। किसी भी साहित्यकार के साहित्य का अध्ययन करने से पूर्व उसके खुद के विषय में जानना समझना भी जरूरी होता है। पंत जी ने कहा है कि --**" वियोगी होगा पहला कवि, आह से उपजा होगा गान।**

उमड़कर आँखों से चुपचाप, बही होगी कविता अनजान।। "

इसी आधार पर आपने अपने भावों या सद्भावों को आस- पड़ोस तथा जीवन में घटित घटनाओं से ही अपने पूर्ण सद्भावों को अपनी कृतियों में समाहित किया है। जिनका वर्णन हम पूर्व अध्याय में कर चुके हैं एहतेशाम जी के उपन्यासों में कुछ दिन और -- १९७६ ई, 2. सुख बरगद -- १९८६ ई., 3.

दास्ता - ए - लापता -- १९९५ ई., 4. बशारत मंज़िल -- २००४ ई., 5. पहर ढलते -- २००७ ई., 6. मदरसा -- २००७ ई. एवं कहानियों में 1. रमज़ान में मौत -- १९८२ ई. (कहानी संग्रह), 2. तसबीह -- १९९८ ई. (कहानी संग्रह), 3. तमाशा -- २००१ ई. (कहानी संग्रह)तथा नाटक 1. एक था बादशाह -- १९८० ई. का प्रत्यक्ष रूप से एहतेशाम जी से मिल कर तथा उनका साक्षत्कार करके इस अध्याय में समाहित किया गया है तथा प्रस्तुत अध्याय में हमने इन सब बिन्दुओं पर सोदारहण विचार-विश्लेषण किया है।

शोध - प्रबंध का तृतीय अध्याय **' हिंदी के सामाजिक सद्भाव पर आधारित कहानी एवं उपन्यास '** को समर्पित हुआ है। इस अध्याय में हमने सामाजिक - सद्भावना पर केन्द्रित उपन्यासों पर एक विहंगम दृष्टि केंद्रित करके सामाजिक - सद्भावना को प्रस्तुत किया है। जिसके अंतर्गत पूर्व प्रेमचंद युग की कृतियों तथा रचनाओं एवं प्रेमचंद युगीन रचनाओं पर हमने चर्चा की गई है। प्रेमचंद पूर्व एवं प्रेमचंद पश्चात् कथा - साहित्य में सामाजिक सद्भावना पर भी दृष्टि डालते हुए उस पर हमने निम्न बिंदुओं के माध्यम से अपने शोध-प्रबंध में इसका वर्णन किया है पूर्व प्रेमचंद युगीन कथा - साहित्य में सामाजिक सद्भावना। प्रेमचंदोत्तर युगीन कथा - साहित्य में सामाजिक - सद्भावना आदि में व्याप्त सामाजिक सद्भवना को बहुत ही सुंदर रूप प्रदान किया गया है। आधुनिक युग से पूर्व के कथा-साहित्य में व्याप्त सामाजिक सद्भावना का हमने इस अधयाय में पुष्टि तथ्यों के आधार पर वर्णन किया है।

शोध - प्रबंध के चतुर्थ अध्याय में **' मंज़ूर एहतेशाम के उपन्यास में उपन्यास साहित्य में सामाजिक - सद्भावना '** पर विचार-विश्लेषण हुआ है। इस अध्याय में मंज़ूर एहतेशाम जी के उपन्यासों में सामाजिक - सद्भाव शीर्षक के अंतर्गत अभिव्यक्त सामाजिक - सद्भावना का हमने विस्तार से वर्णन किया है। जैसे - एहतेशाम जी के कथा - साहित्य के एक उपन्यास 'कुछ दिन और' में पारिवारिक सद्भाव को दर्शाया गया है। राजू नामक पात्र अपने परिवार के प्रति उदासीन है क्योंकि उसके अंदर सद्भावना का आभाव है। प्रत्येक कार्य को करने के लिए वह ' कुछ दिन और ' की माँग करता है तथा घर की वस्तुओं को बेचने से भी नही चूकता।

' सूखा बरगद ' नामक इनकी कृति में हम साम्प्रदायिक सद्भावना को देख सकते हैं उपन्यास में भारत विभाजन के पश्चात् कि स्थिति का हृदय द्रावक चित्रण उपन्यासकार ने बड़ी सजीवता से किया है। उपन्यास मध्यम वर्गीय परिवार से संबंधित है। उपन्यास के कुछ पात्र अतीत के मोह से जकड़े हुए प्रतीत होते हैं और वही जकड़न दो मजहबों के बीच दीवार खड़ी कर देती है। रशीदा उपन्यास की मुख्य नारी पात्र है वह कहती है कि -- " मैं सोचती हूँ जहाँ मैं हूँ जहाँ मैं थी वहाँ से कल्लो या कुसुम तक बराबर की ही दूरी थी। आस - पास की थोड़ी सी चीजें ना होती तो मैं भी कल्लो हो जाती - हब्बू दादा की गालियाँ सुनती, भैंस के आगे चारा डालती या कुछ और थोड़ा सा होता तो कुसुम - लड़को से फ्लर्ट करती।......"

रशीदा के अनुसार -- " सारे लोग पास्ट से नाता तोड़कर किसी ऐसी चीज को अपनाएं जो आज के इंसान के दिमाग से ज्यादा करीब हो।" इस प्रकार पढ़ा - लिखा मध्यम वर्ग इन मनोवृत्तियों से उबरने की कोशिश में है।

ऐसे ही इनके सभी उपन्यासों में व्याप्त पारिवारिक सद्भावना, सामाजिक सद्भावना, धार्मिक सद्भावना, साम्प्रदायिक सद्भावना, सांस्कृतिक सद्भावना, भाषाई सद्भावना, राष्ट्र के प्रति सद्भावना को इस अध्याय में विस्तृत रूप से वर्णित किया गया है।

शोध - प्रबंध के पंचम अध्याय **' मंज़ूर एहतेशाम की कहानियों में सामाजिक - सद्भावना '** में मंज़ूर एहतेशाम जी की कहानियों में सामाजिक - सद्भाव शीर्षक के अंतर्गत एहतेशाम जी की कहानियों में वर्णित सामाजिक - सद्भाव को व्यक्त किया है। आपके तीन कहानी संग्रह प्रकाशित हैं। तीनों में सामाजिक सद्भावों को दर्शाया गया है। पहला कहानी संग्रह ' रमज़ान में मौत' १९८२ ई. में प्रकाशित हुआ है। जिसमें से कुल दस कहानियाँ हैं जो की सामाजिक सद्भावों से ओतप्रोत हैं। जिनमें से कुछ के नाम इस प्रकार है -- घेरा, जश्न, छोटी - छोटी चीजें, अंधेरे में तथा लौटते हुए आदि। दूसरा कहानी संग्रह ' तसबीह ' है, जिसमे कुल पंद्रह कहानियाँ हैं जिसे लेखक ने तीन खण्डों में विभाजित किया है।

प्रथम - खण्ड ' सेहन - में ' लेखक ने दाम्पत्य या घरेलू कहानियों को रखा है। दाम्पत्य जीवन की छोटी - छोटी मुश्किलें, चिंताएं, विफलताएं, रोज की जद्दोजहद , अंधविश्वास, धार्मिक चमत्कार और पाखण्ड को रूपायित किया है।

द्वितीय खण्ड ' चेहरे अजनबी ' में दुनियादारी, बाजारीकरण तथा राजनीति पर सीधा प्रहार किया है।

तृतीय खण्ड ' फिर एक बार दिसम्बर में' भोपाल गैस त्रासदी पर प्रकाश डाला गया है। उपर्युक्त विवेचन के आधार पर मैंने एहतेशाम जी की कहानियों में सामाजिक सद्भावों का वर्णन करने के हेतु उनकी कहानियों में व्याप्त पारिवारिक सद्भावना, सामाजिक सद्भावना, धार्मिक सद्भावना, साम्प्रदायिक सद्भावना, सांस्कृतिक सद्भावना, भाषाई सद्भावना, राष्ट्र के प्रति सद्भावना को इस अध्याय में विस्तृत रूप से विश्लेषित किया है।

शोध-प्रबंध के अंतिम षष्ठ अध्याय में **' उपसंहार '** का स्थान निर्धारित किया गया है। उपसंहार गोपुच्छवत् निश्चित रूप में होता है किन्तु संक्षिप्त होने के साथ - साथ शोध-प्रबंध का एक महत्वपूर्ण अंग भी होता है एक विषय के स्वतंत्र ग्रन्थ में उपसंहार की भूमिका इतनी महत्वपूर्ण नही होती, पर शोध-प्रबंध में उपसंहार न हो तो उसे शोध-प्रबंध ही नहीं माना जा सकता। उपसंहार में मैंने सम्पूर्ण शोध-प्रबंध के सार-संक्षेप को रखने के उपरान्त उसकी उपादेयता, उसके महत्वपूर्ण निष्कर्ष और भविष्यत् संभावनाओं पर भी प्रकाश डालने का उपक्रम प्रस्तुत किया है।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध में हमारे निष्कर्ष व स्थापनाएं इस प्रकार हैं। यद्यपि प्रत्येक अध्याय के अंत में हमने अध्यायगत निष्कर्ष प्रस्तुत किए हैं तथापि समग्र शोध-प्रबंध समग्रावलोकन और अवगहन के उपरांत निम्नलिखित कतिपय निश्चय तक सहजतया पहुंचा जा सकता है--

1) हमारे द्वारा इस शोध-प्रबंध में समाज में व्याप्त सामाजिक सद्भाव को दिखाने का प्रयत्न किया गया है।

2) प्रस्तुत शोध-प्रबंध में प्रथम बार इस रूप में सामाजिक सद्भावना के यथार्थ का तांत्रिक एवं स्वरूप का अध्ययन किया गया है।

3) मैने सामाजिक, परिवारिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राष्ट्रीय तथा भाषिक परिप्रेक्ष्य में आलोच्य रचनाओं का तुलनात्मक अध्ययन किया है।

4) हमारे द्वारा आलोच्य कृतियों के माध्यम से वर्तमान भारतीय समाज व्यवस्था में सामाजिक सद्भाव या विचारधारा का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

5) एहतेशाम के कथा - साहित्य में मानवीय अनुभूतियों एवं संवेदनाओं का परोक्ष रूप से अनुशीलन करके मैने साम्य - वैषम्य को प्रकाशित करने का एक सफल प्रयत्न किया है।

6) आलोच्य रचनाओं की प्रमुख समस्याओं का सामाजिक एवं मानवतावादी अध्ययन मैंने इस शोध-प्रबंध में किया है।

7) इस शोध-प्रबंध में हिंदू-मुस्लिम विभाजन की समस्या को उजागर एक मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

8) आलोच्य शोध - विषय में मानवीय मूल्यों का विस्तार पूर्वक अध्ययन किया गया है।

9) इस शोध-प्रबंध में इंसानियत, जो कि धर्म के मूल में है उसको हमने प्रस्तुत किया गया है।

10) प्रस्तुत शोध-प्रबंध में एहतेशाम जी के सामाजिक सद्भाव का अध्ययन यहाँ सम्यक रूप से किया गया है।

हिंदी कथा - साहित्य पर विहंगम दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है कि हिंदी के कथा - साहित्य ने अपनी विकास यात्रा में कई पड़ाव पार किए हैं। कथा - साहित्य में सामाजिक - सद्भावों को बहुत ही मार्मिक रूप से प्रदर्शित किया गया है। साहित्यकार ने अपनी कहानियों तथा उपन्यासों के द्वारा सामाजिक सद्भाव स्थापित करने का सफल प्रयत्न किया है। एहतेशाम जी के पूर्व के साहित्यकारों का साहित्य इस शोध को पूर्ण करने में हमारे लिए काफी मददगार साबित हुआ है। क्योंकि तुलनात्मक दृष्टि किसी भी शोध को और महत्वपूर्ण बनाती है।

कथा-साहित्य में सामाजिक सद्भावना प्रत्येक कृति में कहीं ना कहीं देखने को मिल ही जाती है। परंतु एहतेशाम जी ने अपने कथा-साहित्य में सामाजिक सद्भावना को उजागर किया है। इस विषय में हिंदू-मुस्लिम के बीच टकराव के कारण तथा मेल दोनों के बीच आपसी मेल को यथार्थ रूप से दर्शाने का प्रयत्न हमने किया है तथा इस विषय में पारिवारिक भावों के सामाजिक स्वरूप को हमने दर्शाने का प्रयत्न भी शोध में करने की भरपूर कोशिश की है। इस शोध में पात्रों के मन में सामाजिक सद्भाव को करीब से देखने का जो अनुभव है वह इस शोध-प्रबंध को अधिक रोचक और सत्यनिष्ठा बनाता है। जिसका मैंने पुष्टि तथ्यों के आधार पर सफल प्रयत्न किया है।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध सुनिश्चित शोध-प्रविधि और शोध-प्रक्रिया के अंतर्गत तैयार हुआ है। मेरी शोध-निर्देशिका प्रो. शन्नो पाण्डेय जी ने शुरू में ही मुझे कुछ स्तरीय शोध-प्रबंधों का अनुसरण कर लेने के लिए कहा था उन शोध-प्रबंधों को देख लेने के पश्चात् मैने शोध-प्रविधि के कतिपय नियमों एवं पद्धतियों को ग्रहण किया कि किस प्रकार संदर्भ पाद-टिप्पणियां अपने शोध-प्रबंध में प्रस्तुत की जाती हैं, उनको प्रस्तुत करने की विधियाँ कौन-कौन सी हैं। ग्रन्थानुक्रमणिका को किस प्रकार तैयार किया जाता है, उसकी कितनी विधियाँ होती हैं आदि।

मैंने महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय के कोर्स वर्क एवं विभागीय कोर्स वर्क में कई नियमों एवं शोध प्रक्रियाओं को सीखा जिसका मुझे मेरे शोध-प्रबंध मे बहुत लाभ प्राप्त हुआ इसमे सीखी गई शोध-पद्धतियों एवं आधुनिक उपकरणों के साथ-साथ शोध - गंगा भी मेरे शोध-प्रबंध के लिए बहुत सहायक सिद्ध हुई हैं। इन सब नियमों एवं अनुभवों का प्रयोग अथवा पालन करते हुए मैंने यह शोध-प्रबंध तैयार किया है जिसमें निम्नलिखित बातों का मैने विशेष ध्यान रखा है - अ). प्रत्येक अध्याय के प्रारंभ में मैने प्रास्ताविक प्रस्तुत किया है जिसमें अध्याय के अंतर्गत किन-किन मुद्दों को रखा जाएगा उनका संक्षिप्त विवरण दिया गया है। ब). समग्रावलोकन की प्रक्रिया द्धारा प्रत्येक अध्याय के अंत में उस अध्याय के निष्कर्ष प्रस्तुत किए है। संदर्भानुक्रम को अध्याय के अंत में रखा गया है जिसमें ग्रन्थ का नाम, लेखक का नाम और पृष्ठ-संख्या का निर्देश समाहित है। पत्र-पत्रिका हो तो महीना और दिनांक दिए गए है। स). शोध-प्रबंध के अंत में “ग्रन्थानुक्रमणिका” को सुव्यवस्थित अकारादि क्रम से छः परिशिष्टों के अंतर्गत प्रस्तुत किया गया है।

मंजूर एहतेशाम जी जैसे अनेक आयामी लेखकों पर शोध-प्रबंध प्रस्तुत हुए हैं और अभी भी हो सकते हैं एहतेशाम जी ने कहानी के लिए जिन शब्दों का सुंदरतम प्रयोग किया है उन्हीं का मुद्रा अलंकार में रूपांतरण करे हुए कहा जा सकता है कि एहतेशाम जी को जितना खोजो एहतेशाम साहित्य कहता ही रहेगा और खोजो और खोजो। मंजूर एहतेशाम जी की भाषा के तुलनात्मक अध्ययन को लेकर काम हो सकता है समय के निकट पर एहतेशाम जी के कथा-साहित्य में सद्भावना तथा अन्य लेखकों के कथा-साहित्य में सद्भावना विषय पर शोध कार्य किया

जा सकता है या एहतेशाम साहित्य में मुस्लिम मानस तथा अन्य साहित्य में मुस्लिम मानस पर शोध प्रबंध तैयार किया जा सकता है एवं एहतेशाम जी के जीवन संघर्ष के परिप्रेक्ष्य में उनके कथा-साहित्य का अध्ययन जैसे जैसे अनेक अनेक आयामों और पहलुओं पर शोध-प्रबंध हो सकते हैं।

अंततः मैं यह शोध-प्रबंध सबके आशीर्वाद से प्रस्तुत कर रहा हूँ। सबसे पहले इस प्रसंग पर मैं अपनी ईश्वर रूपी माता श्रीमती मैनावती देवी जी और पिता श्री काम्ता प्रसाद गौतम जी एवं मातृ रूपी प्रो. शन्नो पाण्डेय जी के चरणों में अपनी श्रद्धा-भक्ति निवेदित करते हुए उनके आशीर्वाद की कामना करता हूँ। इस महायज्ञ को सम्पन्न करने के लिए परिवार जनों में मेरे बड़े भैया अभिषेक गौतम, मझले भैया चन्द्र शेखर गौतम तथा मेरी प्रिय आदणीय एवं शुभचिंतक पूनम जी के प्यार एवं सहयोग ने मेरा हौसला बढ़ाया। पूनम जी ने मेरे शोद्ध कार्य को गतिमान किया तथा निराशा के क्षणों में मेरा हौसला बढ़ाया जिनका में हृदयतल से आभारी हूँ। इनके अतिरिक्त दिल्ली के प्रो. गिरीश चद्र माहेश्वरी अंकल जी एवं डॉ. रमानाथ पाण्डेय सर के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ उनका पुत्रवत प्रेम मुझे सम्पन्न हुआ तथा उनके स्नेह और वात्सल्य से इस मुकाम तक मैं पहुँच पाया हूँ इस अवसर पर मैं उनके ऋण से उऋण कैसे हो सकता हूँ। इसी के साथ मेरे अग्रबन्धु तथा बड़े भाई के समतुल्य असिस्टेंट प्रो. कृष्ण देव तिवारी, डॉ. ईश्वर आहीर, मिथिलेश कुमार, मनीष कुमार, विनोद कुमार शुक्ल जी ने मेरे इस महायज्ञ में मेरा हौसला बढ़ाते हुए मेरा कदम-कदम पर साथ दिया।

तत्पश्चात् मैं फिर से मेरी गुरु माँ प्रो. शन्नो पाण्डेय जी को हृदयतल से आभार ज्ञापित करना चाहूँगा जिन्होंनें शिष्य-रूप में स्वीकृति देकर मुझे उपकृत किया है। उनके प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करना मेरा परम कर्तव्य है। विभागाध्यक्षा प्रोफेसर दक्षा मिस्त्री मैडम जी को मैं कैसे विस्मृत कर सकता हूँ, जिन्होंनें कदम-कदम पर मेरी सहायता की एवं मेरे सिर पर अपना आशीर्वाद बनाए रखा है और मेरा मार्गदर्शन किया। विभाग के अन्य वरिष्ठ प्राध्यापकों में प्रो. श्रीमती कल्पना गवली मैडम, प्रो. एन.एस. परमार साहब,डॉ. अनिता शुक्ल मैडम जी, प्रो. कनुभाई निनामा सर, डॉ. दीपेन्द्रसिंह जाडेजा सर, डॉ. अज़हर ढ़ेरिवाला सर आदि का मैं हृदयपूर्वक आभार मानता हूँ इन गुरुजनों ने समय - समय पर मेरा मार्गदर्शन किया है तथा मैं उनके मार्गदर्शन से लाभान्वित हुआ हूँ। इस अवसर पर में आप सभी का धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ। इनके अतिरिक्त गुजराती विभाग के प्रो. भरत मेहता साहब का मैं परम ऋणी हूँ क्योंकि मंज़ूर एहतेशाम जी के साहित्य में रूची उत्पन्न करने वालों में एक नाम उनका भी है।

इसके साथ ही मैं आधुनिक काल के इस महान साहित्यकार को अश्रुपूर्ण श्रद्धांजलि देना चाहूँगा जिनका निधन इनकी बेगम के गुजरने के एक वर्ष बाद २६ अप्रैल २०२१ कोरोना बीमारी से ग्रसित होकर हुआ। हिंदी कथा साहित्य में सच में ये अपनी एक अलग ही छाप छोड़ गए हैं।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध के लिए मैंने अनेकानेक विद्धानों के ग्रन्थों का सहारा लिया है, उन सबके प्रति श्रद्धा-भक्ति व्यक्त करना मेरा सारस्वत धर्म अवश्य है। अंततः कला संकाय के पूर्व प्राचार्य प्रोफेसर के. क्रिष्नन सर एवं वर्तमान प्राचार्य प्रोफेसर आद्य सक्सेना मैडम जी का मैं हृदयपूर्वक आभार मानता हूँ क्योंकि उनके आशीर्वाद एवं तकनीकी मार्गदर्शन के अभाव में यह गुरूतर कार्य मेरे लिए संभव न होता।

मैं अपनी सीमाओं से पूर्णतय अभिज्ञ हूँ। अतः शोध-प्रबंध में रह गई क्षतियों के लिए पहले से ही विद्वत्जनों के प्रति मैं क्षमाप्रार्थी हूँ। प्रत्येक शोध - कार्य का अपने आपमें एक महत्वपूर्ण स्थान होता है द्वीप से द्वीप प्रज्वल्लित होते हैं। अतः मेरा यह शोध-प्रबंध यदि शोध और अनुसंधान की दिशा में यत्किंचित् भी अग्रसरित हुआ है और यदि उससे भविष्यत् अनुसंधित्सुओं को तनिक मात्र भी लाभ पहुचेंगा तो मैं स्वयं को भाग्यशाली समझूंगा।

अन्त में मैं ईश्वर रूपी माँ के कर-कमलों में अपने इस शोध को समर्पित कर सद्भावना की कुछ पंक्तियों द्वारा विराम लूंगा - -

" Only a few people seem to realize that social harmony and peace with nature, between people, and within the individual only can come about when the material and spiritual realms are reconciled."

/Fethullah Gulen/

"संसार में सब कुछ संभव है,
अगर हर कार्य को भाव एवं लगन से पूर्ण किया जाए !
क्योंकि असम्भव भी तभी सम्भव हो पाता है,
जब कर्म में कूटनीति की जगह सद्भाव और प्रेम का समावेश हो !!"
/स्वयं रचित/

====xxxxxx===